L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
Dr. PRAMOD KUMAR SAHU
Assit- Professor.
Guest- Teacher.
V.S.J. College RAJNAGAR.
MADHUBANI (BIHAR)
pramod kumar dbg 2018 @ gmail.com

B.A PART- I
PAPER- II
PSYCHOLOGY (HONOURS)

TOPIC - Group and Function of the Group.

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अकेले की बजाय दूसरों के साथ रहना पसंद करता है। वह न केवल दूसरे की उपस्थिति से प्रभावित होता है। व्यक्ति स्वयं भी अपनी उपस्थिति से दूसरों के व्यवहार को प्रभावित करता है। व्यक्ति के व्यवहार एवं प्रतिमानों को समाज महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करता है। वह जन्म के बाद जैसे-जैसे दूसरे व्यक्तियों और अनुसार विकसित होता जाता है। प्रत्येक व्यक्ति एक समय में अनेक समूहों से संबंधित होता है। वह एक समय में परिवार, मित्रमण्डली, खेल समूह, कक्षा, आदि अनेक समूहों से संबंधित होता है। अतः वह अनेक स्थायी और अस्थायी समूहों का सदस्य होता है। वह अनेक समूहों का निर्माण भी करता है। समाज के अनेक समूह मानव व्यवहार को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करते हैं। इन समूहों का मनुष्य पर प्रभाव समान ढंग से न पड़कर अलग-अलग ढंग से पड़ता है।

जेम्स डेवर 1968 के अनुसार - सामाजिक समूह व्यक्तियों का वह संग्रह है। जिसमें व्यक्ति किसी मात्रा (Degree) तक इकाई के रूप में अनुभव करते हैं। या कार्य करते हैं।

आरजोनेक और उनके साथियों (1972) के अनुसार - समूह व्यक्तियों का वह जोड़ या मिलान है। जिसमें व्यक्ति किसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अन्तः क्रिया करते हैं।

समूह अपने सदस्यों के कुछ कार्य करता है। अथवा समूह के सदस्यों को समूह से कुछ लाभ होते हैं।

Scanned with CamScanner

समूह के कार्य (Functions of the Group) इनमें कुछ प्रमुख निम्न प्रकार से हैं।

(i) आधारभूत आवश्यकताओं की संतुष्टि :- आधारभूत आवश्यकताओं के अन्तर्गत भोजन, पानी, सेक्स, नींद, आवास आदि आते हैं। समाज के सदस्यों की आधारभूत आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए किसी न किसी रूप में दूसरे सदस्यों या समूह और समाज पर आश्रित रहते हैं। इन आवश्यकताओं की पूर्ति में परिवार का योगदान अति महत्वपूर्ण है। व्यक्ति के जन्म से मृत्यु तक परिवार उसकी इन आवश्यकताओं की पूर्ति में परिवार का योगदान अति महत्वपूर्ण है। व्यक्ति के जन्म से मृत्यु तक परिवार उसकी इन आवश्यकताओं की संतुष्टि करता रहता है। व्यक्ति की आधारभूत आवश्यकताएँ उपरोक्त के अतिरिक्त अन्य भी हो सकती हैं और यह भी कहा जा सकता है कि एक व्यक्ति की जो आधारभूत आवश्यकताएँ हैं। आवश्यक नहीं है कि दूसरे अन्य व्यक्तियों की वही आधारभूत आवश्यकताएँ हों। समाज में कुछ समूह कि आधारभूत आवश्यकताएँ की संतुष्टि में प्रत्यक्ष योगदान करते हैं तो कुछ का योगदान अप्रत्यक्ष होता है।

(ii) सामान्य आवश्यकताओं की संतुष्टि :- समूह व्यक्ति की या अपने सदस्यों की केवल आधारभूत आवश्यकताओं की ही संतुष्टि नहीं करता है। बल्कि सदस्यों की सामान्य तथा अनेक छोटी-छोटी आवश्यकताओं की संतुष्टि भी करता है। इन आवश्यकताओं की संतुष्टि में परिवार के अतिरिक्त पड़ोस, मित्रमण्डली, खेल समूह, धार्मिक समूह, राजनैतिक दल, व्यापारिक संघ आदि की कुछ न कुछ भूमिका हो सकती है।

(III) व्यक्ति का समाजीकरण :- एक ओर जहाँ समूह व्यक्ति की अनेक प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। वहीं वह व्यक्ति के समाजीकरण में भी अति महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। व्यक्ति के समाजीकरण में परिवार के अतिरिक्त मित्र-मण्डली, पड़ोस, स्कूल, कालेज, क्लब, खेल समूह, धार्मिक समूह और राजनीतिक समूह, आदि सभी का कुछ न कुछ योगदान होता है। व्यक्ति के समाजीकरण में इन समूह की भूमिका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार की हो सकती है। समाजीकरण प्रक्रिया के मध्य एक व्यक्ति समाज और समूह के अनेक मूल्यों, प्रतिमानों, आदर्श, विचार और मान्यताएँ, आदि सीखता है। समाजीकरण मानव बनाने में समूह की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

(IV) प्रभाव सदस्यों की आवश्यकताओं की संतुष्टि :- प्रत्येक समूह में कुछ सदस्य प्रभुत्वशाली और प्रभाव होते हैं। दूसरी ओर समूह में अधिकांश सदस्य सामान्य, साधारण या अन्य लोगों का अनुकरण करने वाले होते हैं। प्रायः यह देखा गया है। कि समूह के प्रभाव और प्रभुत्वशाली सदस्यों की आवश्यकताओं की संतुष्टि अन्य सदस्यों की अपेक्षा शीघ्र और अधिक की जाती है। समूह में कमजोर और साधारण सदस्यों की ओर सदस्यों के आगे कोई नहीं पूछता है। उदाहरण के लिए किसी भी राजनीतिक पार्टी के नेता की जो भी प्रभाव और आवश्यकताओं की जो संतुष्टि होती है, वह पार्टी के साधारण कार्यकर्ताओं की नहीं होती है यद्यपि प्रजातंत्र में समूह के सभी सदस्यों को बराबर महत्व मिलना चाहिए। सभी की आवश्यकताओं को समान रूप से बराबर सही संतुष्ट या पूर्ण

किए जाने के प्रयास किये जाने चाहिए। परन्तु व्यवहार में कार्य का पैमाना जो बढ़ता है। कि व्यवस्था और प्रभुत्वशाली लोगों की आवश्यकताओं की ओर अधिक ध्यान दिया जाता है।

(v) सांस्कृतिक भिन्नताओं की उपेक्षा करना :- प्रत्येक समूह की कुछ न कुछ मान्यताएँ, उद्देश्य, प्रेरणा, आदर्श, परम्पराएँ, प्रथाएँ, मूल्य और व्यवहार प्रतिमान आदि होते हैं। यह सब मिलकर उस समूह की संस्कृति का अंग बन जाती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक समूह की कुछ न कुछ संस्कृति होती है। जब प्रत्येक समूह अपनी-अपनी संस्कृति की उपेक्षा स्वयं या अब किसी के द्वारा उपेक्षित करने का प्रयास करता है। समूह की सांस्कृतिक भिन्नता जब नष्ट होने लगती है तब तक समूह के अस्तित्व की कोई रक्षता नहीं होता है।

(vi) नई आवश्यकताओं की पूर्ति :- प्रत्येक समूह और उसके आवश्यकताएँ गत्यात्मक प्रकृति की होती है। समूह की गत्यात्मकता के कारण समय-समय पर परिवर्तन होते रहते हैं। समय के साथ-साथ बदलाव और समूह में नई आवश्यकताएँ उत्पन्न हो जाती हैं। यदि नई आवश्यकताओं की यथासम्भव समाधान नहीं किया जाता है। तो नई आवश्यकताओं के अभाव के कारण समूह के अस्तित्व की खतरा हो जाता है।

(vii) समूह के लक्ष्य :- प्रत्येक समूह के कुछ न कुछ लक्ष्य होते हैं। उन लक्ष्यों को समूह प्राप्त करना चाहता है।

Dr- Poonam Kumari Sinha

Date - 13/05/2020

Scanned with CamScanner